P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# सामाजिक पुर्नजागरण और दयानन्द सरस्वती

# Social Renaissance and Dayanand Saraswati

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

**अम्बरीष मिश्र**
प्रवक्ता,
इतिहास विभाग,
भवानी प्रसाद पाण्डेय पी0जी0 कालेज,
करीमनगर, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**

भारतीय पुनरुत्थान की सम्पूर्ण धाराओं क्रमशः सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना का विकास लगभग एक साथ हुआ। दयानन्द ने एक राष्ट्रीय उन्नायक, समाज सुधारक और राष्ट्रीय कार्यकर्ता के दायित्व को पूर्ण निष्ठा से निभाया और इसी कारण वे रुढ़िवादिता से दृढ़तापूर्वक टक्कर लेते रहे। दयानन्द के धर्म की धारणा एक समग्र राष्ट्रवादी धर्म के रुप में उभर कर जनता के सामने प्रगट हुई। दयानन्द ने भारतीय जनमानस को मानसिक जड़ता, दासभाव और पलायनवादी वृत्ति से हटाकर सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक चेतना का संचार किया था।

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद एवं वैदिक पुनरुत्थानवाद तथा सुधारवाद के प्रणेता दयानन्द सरस्वती ने देश की पतोन्मुख पंथो, परिपाटियों की व्याकुल करने वाली उलझनों को साफ करके एक सरल मार्ग बना दिया। ''दयानन्द ने आर्य समाज स्थापित करके आधुनिक युग की प्रवृत्तियों तथा अतीत, वर्तमान और भविष्य के मध्य सेतु निर्माण कर भारतीयों की पहचान तथा अस्मिता को नवीन पटल पर स्थापित कर गौरवान्वित किया।''[1]

Cultural, political and social consciousness developed almost simultaneously throughout the currents of Indian revival. Dayanand fulfilled the duties of a national activist, social reformer and national activist with full devotion and for this reason he continued to compete fiercely with orthodoxy. The notion of Dayanand's religion emerged as a total nationalist religion and was revealed to the public. Dayanand removed the Indian public from mental inertia, slavery and escapist instinct, and communicated cultural, religious and social consciousness. Dayanand Saraswati, the pioneer of nationalism and Vedic revivalism and reformism in modern India, made a simple path by clearing the distressing confusions of the patriotic sects, conventions of the country. "Dayanand made the Arya Samaj proud by establishing trends of the modern era and bridging the past, present and future by establishing the identity and identity of Indians on the new table." [1]

**मुख्य शब्द** : पुनरुत्थान, राष्ट्रीयता, सामाजिक जनजागरण, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद।

Resurgence, nationalism, social revival, imperialism, colonialism.

**प्रस्तावना**

''दयानन्द सरस्वती अभूतपूर्व योगी, उच्चतम दार्शनिक, गम्भीर विचारक और दूरदर्शी संदेशवाहक थे। उन्होने अज्ञान, अंधविश्वास तथा मजहबी ढोंग के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की तथा विजयी हुए। ईंट पत्थर खाकर, विष के प्याले पीकर भी वे अपनी पूरी शक्ति से सत्य का उद्घोष करते रहे।''[2] ये जीवन पर्यन्त सिंह की तरह गरजते रहें और पूरी मानवता को सामाजिक और धार्मिक गढ्ढे से निकालकर प्रकाश के उच्च शिखर पर स्थापित किया। दयानन्द ने स्वयं को विचारक न मानकर वेदों का सच्चा अनुसरणकर्ता मात्र माना। उन्होंने घोषित किया कि वेदों का अध्ययन करना प्रत्येक भारतीय का अधिकार एवं कर्तव्य दोनों है। उन्होंने विदेशी धर्मों से कुछ भी ग्रहण न किया और अंग्रेजी भाषा से वे पूर्ण अपरिचित थे। नरवणें ने सत्य ही लिखा है कि ''दयानन्द ने वेदों तथा उपनिषदों के आधार पर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने तथा सच्चे आर्य संस्कृति का प्रचार करने, समाज से प्रचलित कुरीतियों का उन्मूलन करने, मूर्तिपूजा तथा कर्मकाण्डों की निरर्थकता पर जोर देकर ईसाई धर्म के आक्रमणों से हिन्दू धर्म और समाज की रक्षा का वीणा बजाकर भारत को शक्तिशाली बनाने का संघर्ष किया।''[3]

**साहित्यवलोकन**–दयानन्द सरस्वती द्वारा सामाजिक पुनर्जागरण में कई शोधकर्ताओं के द्वाराभी शोध किया जा चुका है। विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा किये गये शोध का साहित्यवलोकन इस भाग में प्रस्तुत किया जा रहा हैः–

1. **शोधार्थी राम प्रकाश शर्मा 3 April 2020 –** डी0 ए0 वी0 कॉलेज, पंजाब, ''स्वामी दयानन्द का स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान तथा राजनैतिक दर्शन'' में लिखा है कि दयानन्द सरस्वती का धार्मिक तथा सामाजिक सुधाकर कहा जाता है। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत तथा राजनैतिक विचारक थे। स्वतंत्रता आन्दोलन में उनका योगदान उनके राजनैतिक दर्शन से इंगित होता है, जिसके माध्यम से उन्होने सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार कर लोगों में एकता का विकास किया। जिसके फलस्वरुप ही हमें स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी। उन्होंने ही सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया था, जिसे तिलक ने आगे बढ़ाया था।
2. 17 June 2017 शोधार्थी वर्षा गौतम तथा डॉ0 डी0 एस0 सिंह बघेल– शोधलेख–दयानन्द सरस्वती का दर्शन में लिखा है कि वेदों के प्रचार और आर्यावर्त को स्वतंत्रता दिलानें के लिए ही उन्होने आर्य समाज की स्थापना की थी तथा वेदों की सत्ता को सर्वोपरि मान कर नारा दिया था कि ''वेदों की ओर लौटों''।
3. June 2019 शोधार्थी जे0सी0 जोशी–आर्यसमाज के प्रणेता दयानन्द सरस्वती का वैचारिक चिन्तन– के अनुसार सुधारक के रुप में दयानन्द भारतीय समाज के निर्माता के रुप में अग्रणी कहे जा सकते है। रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में दयानन्द आधुनिक भारत के ऐसे मार्ग दर्शक रहें है जिन्होने कर्मकाण्ड की उलझी राहों के बीच भारतीयों के लिए ईश्वर की विशुद्ध भक्ति तथा मानवता की सेवा का मार्ग प्रशस्त किया।
4. 8 april 2018 शोधार्थी विरेन्द्र कुमार ने लिखा है कि 19वीं सदी के मध्य में आर्य समाज की स्थापनाभारतीय सुधारआन्दोलनमें एक क्रान्तीकारी घटना थी जिसके संस्थापक दयानन्द सरस्वती ने अपने विचारों को भारतीय जनसाधारण वर्ग में फैलाने के लिए स्थानीय भाषा का प्रयोग कर सामाजिक व्यवस्था को सरल बनाने का प्रयास किया, और वेदों की श्रेष्ठता को बताया।

**दयानन्द की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता**

19वीं सदी में आवश्यकताओं के अनुकूल समाज का यथोचित शोधन, परिष्कार, जागरण और भारतीयों में आधुनिक राष्ट्रीयता का बीजारोपण करना था। ''दयानन्द सरस्वती ने समाज के ओजस, तेजस और वर्चस के जागरण के लिए गहराई से सामाजिक कुसंस्कार और अंधपरम्पराओं के निष्कासन के लिए आन्दोलन चलाया था।''[4]

उन्होने व्याप्त जाति–व्यवस्था, अनेक वैवाहिक कुसंस्थाओं, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध व्यापक अभियान छेड़कर सामाजिक जनजागरण का प्रवर्तन किया। दयानन्द ने सामाजिक दायित्व के वहन में पूर्ण ईमानदारी और वैज्ञानिक चिन्तन का सहारा लेकर भारत को बौद्धिक दृष्टि प्रदान की।[5]

एलो कैडोरी ने लिखा है कि ''राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव 18वीं सदी में यूरोप में हुआ। एशिया और अफ्रीका में राष्ट्रवाद जो साधारणतः यूरोपीय प्रभुत्व के विपरीत एक प्रतिक्रिया है, जो राजनीतिक और आर्थिक शोषण के विरुद्ध ही नहीं अपितु यूरोपीय राष्ट्रों के द्वारा उनके विचार के बहिष्कार के प्रति बौद्धिक वर्ग की भावनात्मक प्रतिक्रिया थी।[6] जे0वी0 स्टालिन कहते हैं ''साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया के फलस्वरुप भारत में राष्ट्रीयता की भावना उदित हुई। औपनिवेशिक व्यवस्था ने ही राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया।''[7]

''राष्ट्रवाद इस प्रकार आधुनिकीकरण के तनावों की प्रतिक्रिया है, जो सामाजिक असंतुलन से उपजी भावात्मक उलझनों को निकालने का प्रतीकात्मक द्वार है।[8]

राष्ट्रवाद आधुनिकीकरण का उन्माद है तथा राष्ट्रवादी आन्दोलन इसी उन्माद का परिणाम है। राष्ट्रवाद स्वयं को आधुनिक बनाने की भावात्मक प्रतिक्रिया है, जिसका प्रारम्भ सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलनों से हुआ।[9]

आधुनिक राष्ट्रवाद के विकास में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 1875 ई0 दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज वस्तुतः हिन्दू पुराणपंथ का विरोधी सुधार आन्दोलन था। आर्यसमाज ने राष्ट्र शक्ति का आदर्श नये मध्यम वर्ग के लिए प्रस्तुत किया।[10]

स्वामी दयानन्द की राष्ट्रवादी परम्परा का चरमोत्कर्ष लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, अरविन्द घोष एवं लाला लाजपत राय के चिन्तन से प्राप्त होता है। उन्होने उदारवादी परम्परा के विपरीत नये राष्ट्रवाद का स्वरुप प्रस्तुत किया। ''दयानन्द विदेशी शासन के साथ किसी प्रकार का समझौता करने में असमर्थ थे। भारतीयों का उत्थान अपने धर्म एवं संस्कृति को अक्षुण बनाने के साथ ही दयानन्द ने राष्ट्रवाद के विभिन्न घटकों की व्याख्या की।''[11]

''आर्यावर्त देश से भिन्न में रहने वाले मनुष्यों का नाम राक्षस था। स्वदेश भक्ति का यह आधार ही पुनर्जागरण की श्रेष्ठता सिद्ध करता है।[12]

''भारतीय भू–भाग के प्रेम की झलक जो यूरोपियनों से मिलती है उसका कारण यहाँ की धन सम्पन्नता तथा भारतीयों की उसके प्रति विरक्तता की भावना। अतः विदेशी भी इसकी खनिज सम्पन्नता, वैभव, जलवायु से आकर्षित रहें हैं, अतः समस्त भूमंडल में आर्यावर्त देश सर्वोत्तम देश तथा सर्वोत्तम भू–भाग है और रहा है।''[13]

दयानन्द का स्पष्ट विश्वास था ''सर्वोच्च वैदिक आध्यात्मिक चेतना के माध्यम से भारत का नवीनीकरण हो सकता है और देश को प्राचीन गौरवपूर्ण सर्वोच्च स्थिति प्राप्त हो सकती है।[14]

''भारत के राजनैतिक उत्थान, राष्ट्रवाद एवं पुनर्जागरण को देशी भूमिका में अंकुरित आदर्शों पर आधारित व्यवस्था के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

भारत के प्राचीन धर्म संस्कृति से बढ़कर सम्भवतः कोई भी आह्वाहन नहीं हो सकता, जिससे भारत नवोदित हो।''[15]

भारतीय राष्ट्र की एकता में वैदिक धर्म को दयानन्द राष्ट्रवाद का आधार मानते थे। उनके अनुसार ''सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म के स्थान पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव आने से ही भारतीयों का पतन हुआ। आर्य समाज ने ''वेदों की तरफ लौट चलो'' के नारे से भारतीयों को जिस प्रकार युक्त किया उसका अर्थ भारतीय धर्म भारतीयों के लिए है, भारतीय साम्राज्य भारतीयों के लिए है अर्थात वैदिक धर्म का पालन करके ही हम भारतीय स्वराज्य की स्थापना कर सकते हैं।[16]

''जिस प्रकार इटली के पुनर्जागरण तथा जर्मनी के धर्म सुधार आन्दोलन ने यूरोपीय राष्ट्रवाद के उदय के लिए बौद्धिक आधार पर काम किया था, उसी प्रकार भारत के सुधारकों तथा धार्मिक नेताओं जिसमें प्रमुख दयानन्द थे, के उपदेशों ने देशवासियों में स्वायत्त तथा आत्मनिर्णय पर आधारित राजनीतिक जीवन के निर्माण की इच्छा उत्पन्न की।[17]

''भारतीय आत्मा के जागरण की सर्वप्रथम सृजनात्मक अभिव्यक्ति दर्शन, धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में हुई और राजनीतिक आत्मचेतना का उदय उसके अपरिहार्य परिणाम के रुप में हुआ। दयानन्द ने खुले रुप में इस बात का समर्थन किया कि हमें वेदों, गीता एवं प्राचीन धर्मशास्त्रों के आधार पर अपने वर्तमान जीवन को ढालना चाहिए। पश्चिम की इस यांत्रिक सभ्यता तथा भारत की धार्मिक पुण्योन्मुखी संस्कृतियों के बीच इस संघर्ष से, नवीन भारत का उद्भव हुआ।''[18]

दयानन्द आगे कहते है ''भारतीयों उठो, अपनी अतुलनीय बौद्धिक प्रतिभा, शारीरिक क्षमता और धन–दौलत सबकुछ अर्पित कर, अपने महान त्याग और अदम्य आत्मबल से भारतीय स्वाधीनता की नींव रखो, जिससे ही स्वतंत्र नवीन भारत का निर्माण होगा।[19]

दयानन्द मानते हैं कि ''इसमें कोई संदेह नहीं कि भारतीयों में एकता के अभाव के कारण ब्रिटिश सत्ता की नींव पड़ी तथा धार्मिक एवं सामाजिक विषयों के प्रति भारतीयों की पूर्ण उदासीनता ने इस अनेकता को और अधिक बढ़ाया, निजी आत्मबोध से शून्य गतिहीन रुढ़ियों से ग्रस्त होकर भारतीय, मानवता के आदर्श से विमुख हो रहे थे, जिससे नेतृत्व शून्य था, लेकिन पुनर्जागरण के कारण भारतीय समाज में जो बुराईयाँ आ चुकी थी उसके विपरीत आन्दोलन प्रारम्भ हो गये, जो बौद्धिक क्रांति थी, जिससे राष्ट्रवाद के साथ नवोत्थान हुआ।[20]

दयानन्द ने राष्ट्रवाद को किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक अस्मिता के पहचान से जोड़ा, क्योंकि भारतीय राष्ट्र को मात्र 'भावनात्मक एकता' की एक संगठित इकाई ही नहीं माना जाता वरन् धर्म, संस्कृति और आध्यात्म का एक समन्वित प्रवाह मानकर उसी जहाज पर सवार होकर राष्ट्ररुपी भवसागर को पार किया जाता है।[21]

**अध्ययन का उद्देश्य**

पूर्नजागरण का अर्थ होता है कि फिर से जागना अर्थात हमारी सोई हुई संस्कृति को फिर से जगाना तथा आधुनिक युग की प्रवृत्तियों तथा अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के मध्य सेतु निर्माण कर भारतीय की पहचान तथा अस्मिता को नवीन पटल पर स्थापित कर गौरवान्वित करना है।

मुख्य शब्द –

**निष्कर्ष**

अतः समीक्षात्मक रुप में यह कहा जा सकता है कि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू, हिन्दू तथा हिन्दूतान का अलख जला कर जीर्णशीर्ण सामाजिक तथा धार्मिक मान्यताओं तथा कुरीतियों पर प्रहार करके लोगों में पुनर्जागरण की भावना भर दी, जिससे प्रेरणा लेकर 20वीं शताब्दी के अनेक स्वतंत्रता आन्दोलन प्रेमियों ने पुनर्जागरण को गति प्रदान की। फलतः इससे स्वतंत्रता आन्दोलन तीव्र गति से चला करती थी और और स्वतंत्र भारत की नींव विश्व पटल पर रखी जा सकी।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. *सत्यप्रिय शास्त्री : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान पृ0 62*
2. *लाला लाजपत राय : युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द, पृ0 78*
3. *नरवणे : आधुनिक भारतीय चिन्तन, पृ0 57*
4. *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : हरिश्चन्द्र मैगजीन, 15 फरवरी 1874*
5. *वही, 15 अप्रैल 1874*
6. *एलो कैडोरी : नेशनलिज्म एन एशिया एण्ड अफ्रीका, लन्दन, 1971, पृ0 18.*
7. *जे0वी0 स्टालिन : माडर्निज्म एण्ड नेशन, क्योश्चन मास प्रोडक्शन, कलकत्ता, 1975, पृ0 18.*
8. *जी0ए0 हीगर : अल्प विकास की राजनीति, पृ0 18.*
9. *वही, पृ0 19.*
10. *डॉ0 कर्ण सिंह : भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत, थामसन, कनाट प्लेस, नई दिल्ली, अक्टूबर 1970, पृ0 02.*
11. *वही, पृ0 31–32,*
12. *द्वारिका प्रसाद श्रीवास्तव : भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण पर धार्मिक आन्दोलन का प्रभाव, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1976, पृ0 122.*
13. *वही, पृ0 124.*
14. *वी0पी0 वर्मा : आधुनिक राजनीति चिन्तन, लक्ष्मी नारायण, 1975, पृ0 08.*
15. *वही, पृ0 124.*
16. *जे0एन0 फर्कूहर : मार्डन रिलीजस मूवमेन्ट इन इण्डिया, पृ0 172.*
17. *वी0के0 पाण्डेय : गुलाम भारत का आजाद मानस, प्रगतिशील लेखक संघ, पटना, 1978, पृ0 08.*
18. *वही, पृ0 10.*
19. *रघुनाथ देवागिरी : आधुनिक भारत के निर्माता गोपाल कृष्ण गोखले, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1967, पृ0 22.*
20. *के0के0 दत्ता : डान ऑफ रेनेसेन्ट इण्डिया, पृ0 20.*
21. *ए0आर0 देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977, पृ0 265.*